इतिहास बनाने की नींव है - मनोबल

श्रेष्ठ मनोबल वाले वीरों का ही इतिहास स्मरण करता है। वे इतिहास बदल देते हैं, वे संसार बदल देते हैं। वे भूमण्डल पर नवीन विचारधाराओं की सरिताएं प्रवाहित करके मनुष्यों के सूने मन में पुनः हरियाली का बीजारोपण कर देते हैं। ऐसे मनुष्य राजनीति के क्षेत्र में भी हुए और धर्म के क्षेत्र में भी। युद्ध में भी ऐसे ही वीरों ने अदम्य साहस परिचय दिया और विज्ञान के क्षेत्र में भी ऐसे श्रेष्ठ मनोबल से सुसज्जित मनुष्य ही संसार को कुछ दे सके। चाहे कोई भी क्षेत्र रहा हो, मनोबल से श्रृंगारित महापुरुषों ने सदा ही मानव समुदाय का साहस बढ़ाया और उनकी प्रेरणा के स्त्रोत बने।

आप भी यदि कुछ करना चाहते हैं, जीवन में कुछ बनना चाहते हैं, संसार को कुछ देना चाहते हैं तो श्रेष्ठ मनोबल संग्रह कर आगे बढ़ो और चाहे कुछ भी हो जाए, कभी भी पीछे न हटने की प्रतिज्ञा कर लो। यदि आप ऐसा न कर पाए तो आपको भी समाज की उन्हीं घिसी-पिटी राहों पर चलना पड़ेगा जो लोगों ने बना दी हैं। परंतु समय बदल चुका है, सभ्यताओं का नवीनीकरण हो चुका है, युग भी बदलने वाला है अतः आप भी बदलो।

चाहे आप विद्यार्थी हैं या कोई व्यवसायी, मनोबल आपकी अमूल्य निधि है। किसी-किसी ने यह मनोबल बचपन से ही संस्कारवश पाया है तो किसी अन्य को इसे प्राप्त करना होता है। आपने कई विद्यार्थी देखे होंगे जो कभी भी घबराते नहीं, परीक्षा उनके लिए आनंद होती है। यदि आप गरीब हैं, पढ़ने के लिए धनाभाव है, मां-बाप आपको इसीलिए पढ़ाना भी नहीं चाहते तो भी मनोबल से, विवेक बल से काम लो। अपना रास्ता स्वयं ढूंढ लो। परिस्थितियों से हारकर उच्च लक्ष्य को छोड़ देना कायरता होगी और अंत में पछताना ही पड़ेगा। हां, आपको दिन-रात मेहनत करनी पड़ेगी। परंतु मेहनत के साथ यह सोच-सोचकर स्वयं को परेशान न करो कि मेरे पास यदि धन होता तो...यदि आपके पास धन होता तो मनोबल न होता। आपको क्या चाहिए - केवल धन या मनोबल। यदि आपके पास धन होता तो जीवन-यात्रा का अनुभव भी तो न होता। धन हो और मनोबल न हो तो धन का सुख अधूरा रहेगा, ऊंचे विचारों का कोई अनुभव न होगा।

यदि आप पढ़ाई में कमजोर है और सभी आपकी असफलता को निश्चित मानते हैं तो भी आप मनोबल को बढ़ायें और सभी को इसका प्रमाण दें - ''मैं कमज़ोर नहीं हूँ।'' यह अनादि अटल सत्य मानकर कमज़ोर न बनो। सच जानो तो तुम कमज़ोर नहीं हो। तुम मनुष्य हो और मनुष्य के पास विवेक है, बस उसे बढ़ाओ, उसे बढ़ाओ पुनः-पुनः के अभ्यास से... कवि ने ठीक ही तो कहा...। ''करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरी आवत-जात है, शिल पर होत निशान।'' रस्सी पत्थर से गहरा गड्ढा कर देती है तो भला अभ्यास से कम बुद्धि का मनुष्य क्या बुद्धिमान नहीं बन सकता ? अवश्य बन सकता है। कालीदास का उदाहरण क्या इसका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। ऐसे ही अन्य कई उदाहरण आपने अपने ही पास देखे होंगे।

'' हार न मानो बल्कि हराओ।''

तुम शक्तिशाली हो- यह भूल न जाओ। तुम जो चाहो कर सकते हो - इस सत्य की विस्मृति न होने दें, आने वाले विघ्नों को, जीवन के तूफानों को, मार्ग के संकटों को तुम्हें हराना है। तुम बहादुर बनो, वे तुम्हें हराने आएं और हार खाकर जायें। बस, इतना ही मनोबल यदि तुमने जमा कर लिया तो तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा। आपने देखा होगा, कई लोग सीधा-सीधा जीने में सुख का अनुभव नहीं करते। उन्हें मार्ग के कांटे ही सुख देते हैं। वे ऊंचे-ऊंचे पत्थरों से अपने मनोबल को लड़ाना चाहते हैं। ऐसे मनुष्यों का सुख इस संसार में दिखाई देने वाले सुख से कहीं ज़्यादा महान होता है। ये भौतिक सुख उनके कदमों को रोक नहीं पाते। वे सदा ही विघ्नों व परिस्थितियों का आह्वान करते रहते हैं और नदी की तेज धारा से विपरीत तैरने में ही उन्हें आनंद मिलता है। वे कुछ नया सीखना चाहते हैं, वे कुछ नया करना चाहते हैं। कितने ही लोगों ने नावों में बैठकर अकल्पनीय तूफानों से ग्रस्त बड़े-बड़े सागरों को पार करके अपने असीम साहस व मनोबल का परिचय दिया। यद्यपि इनमें उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं हुआ। परंतु वे अपने मनोबल को बढ़ाना चाहते थे। कई विद्यार्थी बड़ी-बड़ी स्पर्धाओं में इस भय से नहीं बैठते कि वे सफल नहीं होंगे। फलस्वरूप वे पढ़ लिखकर भी छोटी-छोटी नौकरी में अपना जीवन निकाल देते हैं। और कई, बार-बार फेल होकर मन से हार नहीं मानते और एक दिन सफल होकर वह कुछ कर दिखाते हैं, जिसकी समाज को कल्पना भी नहीं होती। यदि आप व्यापारी हैं, तो भी आप व्यापार में उतार चढ़ाव के आगे निराश न हों। "सफलता हमारी ही होगी" यही आपका नारा हो। मनोबल क्षीण न होने पाए, क्योंकि मनोबल गिरते ही कदम रूक जाते हैं और मनुष्य आगे कुछ भी प्रयास करना नहीं चाहता। घाटा होने पर पुनः राह निकालो। यदि दिवाला भी हो जाए तो भी घबराओ नहीं, शेर की तरह जीना सीखो। पुनः दृढ़ संकल्प से कार्य में जुट जाओ। अनेक लोग तुम्हारे सहयोगी हो जाएंगे और तुम्हारे श्रेष्ठ भाग्य का सितारा एक बार पुनः विश्व-गगन में चमक उठेगा।

चान्दपुर-उ.प्र.। जनसंख्या कानून रैली कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री गिरीराज सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साधना।

कोटा-राज.। कोटा के राजा इजराज सिंह जी की धर्मपत्नी एवं विधायक श्रीमती कल्पना देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला।

जालंधर-पंजाब। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद संतोख सिंह चौधरी को फूलों का गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. मीरा। साथ हैं समाजसेवी हैरी सिंह, समाजसेवी कमल देव जोशी, ब्र.कु. रेखा तथा अन्य।

लुधियाना-पंजाब। 'द रिलेशनशिप क्योर' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी को सम्मानित करते हुए डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन जज एस.गुरबीर सिंह। साथ हैं ब्र.कु. राजकुमारी तथा ब्र.कु. सरस्वती।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए प्रो. सरिता वीरांगना, उपाध्यक्षा अखिल भारतीय महिला परिषद सुनीता वर्मा, अखिल भारतीय महिला परिषद की अध्यक्षा राय कुमकुम, शिक्षिका सुधा कुमारी, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

बिहार शरीफ-बिहार। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' रैली में भाग लेते हुए ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. रिमझिम तथा अन्य।

कटरा-उ.प्र.। शिव जयंती पर शिव संदेश देने हेतु रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए विधायक बावन सिंह, जिला उपाध्यक्ष भाजपा हरीश शुक्ला, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।